बिहार शोध समागम

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 3, July-September 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

स्वामी विवेकानंद : आधुनिक भारत के देशभक्त संत

1. डॉ. मनोज कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
एचएनबी गढ़वाल यूनिवर्सिटी, श्रीनगर गढ़वाल
2. डॉ. रिचा थपलियाल
असिस्टेंट प्रोफसर
ग्राफिक एरा डीम्मड यूनिवर्सिटी, देहरादून

मथितार्थ

भारत में ब्रिटिश एक व्यापारी के रूप में आए। धीरे–धीरे उन्होंने भारत को अपने अधीन कर लिया। ईसाई मिशिनीरियों द्वारा यहाँ पर आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया गया और साथ ही साथ ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा भारतियों की कठोर आलोचना की गई। उदाहरण के रूप में जे.एस मिल ने अपनी पुस्तक द हिस्ट्री ऑफ अन्सिएंट इंडिया में भारतीय इतिहास को तीन भागों में बाँटा तथा साथ ही साथ अंग्रेजों द्वारा भारत पर किये जाने वाले शासन का समर्थन किया। उनके द्वारा भारतीय लोग जाहिल, अंधविश्वाशी एवं शासन चलने योग्य नहीं हैं बल्कि यह ब्रिटिश साम्राज्य की उदारता है कि वो लोग उन्हें सभ्य बना रहे हैं। उपरोक्त परिस्थितियां के कारण 19 वी शताब्दी में बौद्धिक गतिविधियों का एक वास्तविक विस्फोट हुआ जिसका कि केंद्र खासकर पश्चिमि भारत एवं बंगाल बना। यह आंदोलन यंग बंगाल के नाम से जाना जाता है। इस आंदोलन द्वारा कई समाज सुधारकों जैसे कि राजा राम मोहन रॉय, ईश्वर चंद विद्या सागर, स्वामी विवेकानंद आदि द्वारा भारतीय उत्थान के लिए एवं उसे कुरीतियों से निकालने के लिए स्वयंअपनी रूढ़िवादी परम्पराओं का पुरजोर विरोध किया गया।

संकेत शब्दः ब्रिटिश, ईसाई मिशिनीरियों, आधुनिक शिक्षा, आंदोलन, उत्थान, रूढ़िवादी, कुरीतिया

परिचय : किसी विशाल वट वृक्ष के नीचे हम खड़े हो कर हम कभी भी यह नहीं सोच सकते कि यह एक छोटे से वृक्ष से बना है। इसी प्रकार कभी किसी ने यह नहीं सोचा था की विश्वनाथ दत्त एवं भुवनेश्वरी देवी के घर जन्मा शिशु भविष्य में एक ऐसी महान शक्ति का संचार करेगा जिसका प्रभाव देश विदेश तक फैल जायेगा। स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 इ. में कलकत्ता के सिमला में हुआ था। उन्हें घर में नरेंद्र नाथ बुलाया जाता था। वह बचपन से ही बहुत नटखट एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। 6 वर्ष की आयु में उन्होंने विद्यालय में प्रविष्ट किया। परन्तु वहाँ पर अन्य संगी साथियों से उन्होंने कुछ ऐसे तीखे शब्द सीख लिए जिससे उनके परिवार की शालीनता विचलित हो उठी। इस कारण उन्हें विद्यालय जाने से रोक दिया गया और घर पर ही उनकी पढाई के लिए एक शिक्षक नियुक्त किया गया। नरेंद्र नाथ

ने शीघ्र ही अपनी उल्लेखनीय बुद्धि का परिचय देते हुए पठन पाठन में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया। 7 वर्ष की आयु में ही उन्होंने ''मुग्ध बोध'' नामक संस्कृत व्याकरण को कंठस्थ कर लिया, साथ ही साथ रामायण एवं महाभारत के सम्पूर्ण उद्धरण उन्हें कंठस्थ थे। नरेंद्र दत्त ने श्री ईश्वर चंद विद्या सागर द्वारा स्थापित ''मेट्रो पोलिस इंस्टिट्यूट'' में प्रवेश किया। नरेंद्र नाथ को निरस्ता से चिढ थी अतः वह पढाई के साथ–साथ खेलने, नाटक, कसरत, संगीत, तथा खाना बनाने में भी रुची रखते थे। 2 नरेंद्र नाथ के आँगन में एक व्यायाम शाला थी जहाँ वे अपने साथियों के साथ व्यायाम किया करते थे। उन्होंने तलवार बाजी, लाठी चलन, कुश्ती,नौका चलन, और अन्य खेलों की शिक्षा ली। वे नियमित रूप से अखबार पढ़ते थे एवं सार्वजानिक भाषणों में भाग लेते वहां जो कुछ सुनते उसका सार अपनी मौलिक आलोचनाओं के साथ अपने मित्रों को सुनकर उनके आश्चर्यचकित कर देते थे। उन्होंने एक ऐसी तर्क शक्ति का विकास किया था जिसका सामना कोई नहीं कर सकता था। इंटेरन्स परीक्षा पूरी करने के बाद नरेंद्र नाथ कॉलेज में प्रविष्ट हुए। पहले उन्होंने कलकत्ता के प्रसिद्ध प्रेसीडेंसी कॉलेज में दाखिला लिया और बाद में स्कॉटिश जनरल मिशनरी बोर्ड द्वारा स्थापित असेंबली इंस्टिट्यूट में प्रवेश लिया। कॉलेज में भारतीय प्रोफेसरों के साथ–साथ अंग्रेज प्रोफेसर भी उनकी प्रतिभा से अनजान ना रह सके। प्रिंसिपल डब्ल्यू–डब्ल्यू हेस्टी ने एक बार कहा '' मैंने सुदूर देशों का ब्रह्मण किया है पर मुझे कहीं भी ऐसा लड़का नहीं मिला, जिसमें नरेंद्र की प्रतिभा और सम्भावनाये हों। वह जीवन में अवश्य ही अपनी छाप छोड़ेगा।'' नरेंद्र ने अपने पाठ्यक्रम को अपनी पुस्तकों तक ही सिमित नहीं रखा था। कॉलेज के प्रथम 2 वर्षों में उन्होंने पाश्चात्य तर्कशास्त्र के समस्त प्रामाणिक ग्रंथों पर पूरी तरह अधिकार प्राप्त कर लिया था। तथा तीसरे एवं चौथे वर्षों में उन्होंने अपने को पाश्चात्य दर्शन एवं यूरोप के विभिन्न राष्ट्रों के प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास का अध्ययन किया। नरेंद्र नाथ ने जॉन स्टुअर्ट मिल, डेविड ह्यूम और हर्बर्ट स्पेंसर का भी अध्ययन किया था। वे हर्बर्ट स्पेंसर के विचारों से काफी प्रभावित थे। जिस समय नरेंद्र नाथ कॉलेज में ही थे उस समय बंगाल में युवा बौद्धिकजनो पर प्रसिद्ध ब्रह्मसमाजी नेता श्री केशव चंद्र का प्रभाव था। नरेंद्र नाथ केशव चंद सेन के व्याख्यानों एवं लेखों से काफी प्रभावित थे। नरेंद्र नाथ ने अपने कॉलेज के प्रिंसिपल विल्लियम हेस्टी से एक बार श्री राम कृष्ण का उल्लेख सुना था। एक दिन प्रिंसिपल हेस्टी कक्षा में वूड्सवर्थ की एक कविता पढ़ा रहे थे तो उन्होंने कवी की भावस्था को दर्शाने में कठिनाई हुई तब उन्होंने अपने विद्यार्थियों से कहा कि यदि इस भावस्था को प्रत्यक्ष रूप से देखना हो तो दक्षिणेश्वर में श्री राम कृष्ण परमहंस से मिलो। यहाँ

से नरेंद्र नाथ का जीवन परिवर्तित हुआ और वह एक चपल, बुद्धिमान एवं शरारती युवक से युवनायक विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुए। नरेंद्र नाथ श्री राम कृष्ण से मिले और उनके सानिध्य में लगभग 6

वर्षों तक रहे। इसके पश्चात उन्होंने सन्यास ग्रहण किया और उन्हें विवेकानंद नाम मिला। सन्यासी परम्परा के अनुसार परिव्राजक जीवन व्यतीत किया और सम्पूर्ण भारत का ब्रह्मण किया एवं भारत की दयनीय दशा को देखकर वह बहुत दुखी हुए। 1893 इ. में शिकागो में एक धर्मसभा का आयोजन हुआ जिसमें ईसाई धर्म के साथ–साथ जैन, यहूदी , हिन्दू, बौद्ध, मुस्लिम, कन्फूशियन,पारसी धर्मों के प्रतिनिधि आमंत्रित थे। केवल स्वामी विवेकानंद ही किसी संप्रदाय विशेष के नहीं थे। वे तो समस्त भारतवर्ष के सनातन बौद्धिक धर्म के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित थे। धर्म सभा में उपस्थित सभी प्रतिनिधियों द्वारा पहलेसेतैयार किया गया भाषण दिया गया परन्तु स्वामी विवेकानंद ने अपने विचार बिना किसी तैयारी के व्यक्त किये। स्वामी विवेकानंद के इस सम्बोधन में विश्व भातृत्व का बीज, विश्व मानवता का संचार, वैदिक ऋषि की वाणी सभी कुछ निहित था। इस धर्मसभा से लौटने के पश्चात स्वामी विवेकानंद ने भारतवर्ष लौटकर अपने संदेशों को देशवासियों तक पहुँचाया। वे अपने क्षीण होते हुए शरीर की प्रवाह ना करते हुए अपने जीवन के अंतिम समय तक देशवासियों के लिए निरंतर कार्य करते रहे। 4 जुलाई 1902 को स्वामी विवेकानंद महासमाधि के द्वारा आत्मरूप में विलीन हो गए। स्वामी विवेकानद की आयु उस समय 39 वर्ष की ही थी। इस प्रकार उन्होंने वह भविष्यवाणी भी सार्थ कर दी थी जो उनके अधरों पर रहती, '' मैं अपने 40 वर्ष तक जीवित नहीं रहूँगा। ''3

स्वामी विवेकानंद : शिक्षा एवं समाज

"म्कनबंजपवद पे जीम उंदपमिेजंजपवद व िजीम चमतमिबजपवद ंसतमंकल पद उंद." शिक्षा क्या है ? विवेकानंद नेशिक्षा कोएक समग्र शिक्षा केरूप में प्रस्तुत किया है। पुस्तकों कोयाद करना उनके अनुसार शिक्षा नहीं है। विवेकानंद द्वारा शिक्षा का सार ना कि केवल सूचनाओं को मस्तिष्क में एकत्र करना है। सूचनाओं को केवल एकत्रित करना शिक्षा ना होकर मस्तिष्क को एकाग्र करना ही विवेकानंद द्वारा शिक्षा का सार बताया गया है। शिक्षा का कार्य मनुष्य का चरित्र निर्माण करना एवं उसे जीवन के प्रति तैयार करना है। उनका मानना था कि यदि कोई जीवन भर केवल पांच विचारों को ले और अपना सम्पूर्ण जीवन उन्हीं विचारों पर आधारित करके अपना चरित्र गठन करे वह निश्चित रूप से उस व्यक्ति से श्रेष्ठ है जिसने की सम्पूर्ण जीवन लाइब्रेरी में रखी पुस्तकों को कंठस्थ करने में अपना जीवन व्यतीत किया है। स्वामी विवेकानंद केशब्दों में यदि शिक्षा केवल सूचनाओं केसमानार्थी होती तो सारे पुस्तकालय संसार के महान संत होते और एन्सिक्लोपीडिया ऋषि। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि सम्पूर्ण ज्ञान हमारे भीतर ही है एवं कोई ज्ञान बहार नहीं है।यह सबकुछ हमारे अंतर में ही निहित होता है। बाहरी दुनिया केवल एक अवसर है जो की आपको अपने मन का अध्यन करने के लिए प्रेरित करती है। ''हम कहते हैं कि न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण की खोज की पर क्या वह किसी कोने में बैठकर इंतजार क्र रहा था ? '' वह

ज्ञान सब कुछ उसके मस्तिष्क में ही था और समय आते ही वह ज्ञान प्रकट हो गया। वह सम्पूर्ण ज्ञान जो कि संसार के लोग पाते हैं वह सब मस्तिष्क में ही है। ब्राह्मण का पुस्तकालय हमारे अपने मस्तिष्क में ही है। बाहरी संसार से केवल हमें सुझाव, मौके मिलते हैं जोकिं हमारे मस्तिष्क के ज्ञान को प्रकट करते हैं। सेब के गिरने से न्यूटन को एक संकेत मिला और उन्होंने अपने मन का अध्ययन किया। उन्होंने सभी पिछली कड़ियों को पुनर्व्यवस्थित किया जिसे हम गुरुत्वाकर्षण नियम कहते हैं। यह नियम ना तो सेब में था और ना ही पृथ्वी के केंद्र में । 4

आत्म–शिक्षा

जिस प्रकार हम एक पौधे को कुछ मात्रा तक ही विकसित कर सकते हैं उसी प्रकार हम बच्चों को सबकुछ नहीं सीखा सकते। पौधे की एक समय तक देखभाल करनी पड़ती है और बाद में वह अपनी प्रकर्ति स्वयं विकसित करता है उसी प्रकार बच्चे भी स्वयं सीखते हैं आप बस उसको उसके तरीके से आगे बढ़ने में सहायता कर सकते हैं। परन्तु इसके विपरीत आप इस सकारात्मक प्रकृति पर ध्यान ना देकर नकारात्मक रूप से बच्चों को ढालना शुरू कर देते हो और उनके विकास में हस्तक्षेप करना शुरू कर देते हो। आपका कार्य सिर्फ बच्चों के मार्ग में रुकावटों को हटाना है क्यूंकि ज्ञान तो वो अपनी प्रवर्ति अनुसार स्वयं ही प्राप्त कर लेंगे। बच्चे स्वयं ही आत्म–शिक्षित होते हैं शिक्षक की यह सोच कि वह बच्चों को पढ़ा रहे हैं यह विचार सब कुछ बर्बाद कर देता है क्यूंकि शिक्षक का कार्य केवल एक सहायक केरूप में ही होता है। मनुष्य के भीतर सारा ज्ञान है जिसे की जागृति की आवश्यकता होती है और केवल यह जागृति देना ही शिक्षक का कार्य है। हमें बस इतना ही करना है कि विद्यार्थी अपने हाथ–पैरों, कान और आँखों का उचित उपयोग करते हुए अपनी बुद्धि को किस प्रकार लागू करना है वह सीखे । स्वामी विवेकानंद का मानना था कि अभिभावकों द्वारा बच्चों को सीखने के लिए खुला छोड़ देना चाहिए क्यूंकि अगर उनपर जबरदस्ती की गई तो वह विरोध ही करेंगे इस प्रकार वह एक सिंह की भाँती ना होकर एक लोमड़ी की तरह चालक बन जायेंगे ।5

सकारात्मक विचार

स्वामी विवेकानंद का मानना था कि हमें सदैव अपने विचार सकारात्मक रखने चाहिए तथा साथ ही साथ वही सकारात्मक विचार अपने बच्चों को भी देने चाहिए। नकारात्मक विचार केवल मनुष्यों को दुर्बल ही बनाते हैं। आपने बहुतय पाया होगा कि जहाँ पर माता पिता बच्चों को लगातार पढ़ने के लिए जोर देते हैं और उनके लिए नकरात्मक शब्द प्रयोग करते हैं वह उन नकारात्मक विचारों को लेकर वैसे ही बन जाते हैं। यदि आप बच्चों के साथ प्यार से बात करो एवं उनका उत्साहवर्धन करो तो वह समय के साथ अवश्य ही सुधरेंगे। यदि अपनी सकारात्मक विचार देंगे तो वह स्वयं के पैरों पर एक आत्मविश्वाश के

साथ खड़े होंगे। शिक्षा को बच्चों की आवश्यकता अनुसार ही संशोधित करना चाहिए। किसी भी प्रगति के लिए प्रथम अवस्था स्वतंत्रता होती है अतः हमें बच्चों के सर्वांगी विकास के लिए खुला एवं सकारात्मक माहौल देना चाहिए।6

वास्तविक शिक्षा

स्वामी विवेकानंद के अनुसार वास्तविक शिक्षा वह शिक्षा है जोकि चरित्र का निर्माण करे एवं मानसिक शक्ति का विकास करे। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि प्रत्येक मनुष्य केवल आदेश देना चाहता है कोई भी आज्ञा का पालन नहीं करना चाहता। वह मानते हैं कि सर्वप्रथम सेवक की तरह आज्ञा पालन सीखो तब ही केवल एक सच्चे मालिक बन सकते हो। उनका मानना था कि शिक्षा निम्न से निम्न वर्गों तक पहुंचाई जानी चहिये ताकि वो अपने खोये हुए व्यक्तित्व को पा सकें। यदि गरीब से गरीब व्यक्ति शिक्षा नहीं ले पाते हैं तो शिक्षा उन उन तक पहुँच जानी चाहिए। स्वामी विवेकानंद एक ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जिसके द्वारा चरित्र निर्माण हो, मन की शक्ति और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके। 7 स्वामी विवेकानंद के शब्दों में ,शिक्षा से मेरा विचार, शिक्षा के साथ व्यक्तिगत संपर्क है। एक शिक्षक के निजी जीवन के बिना कोई शिक्षा नहीं होगी। अपने विश्वविद्यालय को ले लो, उन्होंने अपने अस्तित्व के पचास वर्षों के दौरान क्या किया? उन्होंने एक भी मूल व्यक्ति नहीं बनाया है। वे केवल शरीर की जांच कर रहे हैं । हमारे राष्ट्र में अभी तक सामान्य राष्ट्र के लिए बलिदान का विचार विकसित नहीं हुआ है। पाश्चात्य शिक्षा के बारे में उनका कहना था कि हमारी अंग्रेजी शिक्षा ने सबकुछ नष्ट कर दिया है और उसके स्थान पर कुछ भी नहीं छोड़ा है। हमारे बच्चों ने विनम्रता खो दी है। वो अच्छी तरह बात करना अपमानजनक मानते हैं। यह महतवपूर्ण समय है जब हमें अपनी पुरानी विनम्रता की ओर वापस लौटना चाहिए। उनका मानना था की हमें अपने भावी युवाओं का अधिक ध्यान रखना चाहिए क्योंकि हमारा भविष्य उन्हीं पर निर्भर करता है। सारी शिक्षा एवं सारे ज्ञान का अंतिम उदेश्य केवल मानव निर्माण है। उनके शब्दों में "मस्तिष्क और मांसपेशियों का विकास एक साथ होना चाहिए। एक बुद्धिमान मस्तिष्क के साथ लोहे की नसें दृ और पूरी दुनिया आपके चरणों में है। "8

स्त्री शिक्षा :

स्वामी विवेकानंद ने स्त्रियों की शिक्षा पर भी विशेष जोर दिया है। उनका मानना था कि स्त्री तथा पुरुष में किसी भी प्रकार का भेद नहीं होना चाहिए। वह कहते थे यह समझ पाना अत्यंत कठिन है कि हमारे देश में स्त्री तथा पुरुष के मध्य इतना भेद क्यों है जबकि वेदांत दर्शन के अनुसार जबकि वह आत्मप्रकाश सभी में सामान्य रूप से व्याप्त है। स्मृतियों एवं अन्य ग्रंथों में कुछ नियम बनाकर पुरुषों द्वारा महिलाओं को केवल भोग एवं उत्पादन करने तक ही सिमित कर दिया है।9 जिस प्रकार पंडितों द्वारा वेदों एवं

उपनिषदों का ज्ञान अन्य जाती के व्यक्ति के लिए निषेद कर दिया गया था तथा साथ ही साथ महिलाओं को उनके अधिकार से वंचित कर दिया गया। हमारे यहाँ स्त्रियों का सीान हमेशा से श्रेष्ठ रहा है। हमारे देश की मैत्री एवं गार्गी वो महिलाएं थी जिनका की वर्णनं वेदो एवं उपनिषदों में मिलता है एवं इनका स्थान बड़े–बड़े ऋषिओं के समान था। तथा इनका स्थान बड़े बड़े ऋषियों के समान ही पूजनीय है। स्वामी विवेकानंद द्वारा स्त्रियों की शिक्षा पर भी काफी जोर दिया गया। उनका मानना था कि स्त्रियों की वर्त्तमान दशा का उद्धार करना होगा। सर्वास्त्रधारण को जगाना हो तभी भारत का कल्याण होगा। वह स्त्री तथा पुरुषों के मध्य अंतर का भी विरोध करते थे। उनका मानना था कि स्त्रियों की समस्याएँ बहुत हैं तथा साथ ही साथ वह गंभीर हैं। उनका मानना था कि स्त्रियों को शिक्षा देनी चाहिए एवं फिर उनकी स्तिथि पर छोड़ देना चाहिए। वे स्वयं ही अपनी स्तिथि में सुधार कर लेंगी उन्हें और किसी के सुधार की आवश्यकता नहीं। आयरिश शिक्षिका मार्गरेट नावेल (जिन्हें उन्होंने सिस्टर निवेदिता का नाम दिया वो स्वामी विवेकानंद के आमंत्रण पर भारत आयी और उन्हें विवेकानंद ने भारतीय महिलाओं की स्तिथि में सुधार लाने के लिए सहयोग करने कहा)10

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण

स्वामी विवेकानंद का मानना था की बच्चों को शिक्षा के द्वारा जो भी विचार दिए जाएँ वह उनकी मातृभाषा में ही दिए जाएँ। उन्हें उनकी सभ्यता एवं संस्कृति के बारे में बताया जाये क्यूंकि यदि जनमानस इस प्रकार से शिक्षा नहीं दी जाएगी तो उनकी स्तिथि में उत्थान स्थाई नहीं रह पायेगा। उसी प्रकार इन सब शिक्षाओं के साथ साथ संस्कृत शिक्षा भी अनिवार्य है। महत्मा बुद्ध द्वारा भी उस समय अपने उपदेश उस समय में प्रचलित भाषा पाली में दिए जाते थे जो की लोगों की आम भाषा थी। उसका प्रभाव यह हुआ की लोगों को उनके उपदेश आसानी से समझ आते थे। और इस कारण उनके विचार शीघ्र ही सुदूर छेत्रों में फैल गए। 11

स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद

सामान्य शब्दों में राष्ट्रवाद से तात्पर्य किसी देश के प्रति निष्ठां रखना एवं राष्ट्रिय चेतना के तप में उठे परिमापीत करने से होता है। इस प्रकार की भावना अन्य देशों की तुलना में अपनी संस्कृति एवं भावना को सर्वश्रेष्ठ मानती है। राष्ट्रवाद पर यह एक संक्रिण विचार है। वहीं स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवाद पर विचार संक्रिण ना होकर विस्तृत थे। विवेकानंद का राष्ट्रवाद पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत भारतीय धर्म प आधारित था। उनका मानना था कि धर्म ही भारतीय जीवन का आधार है। 12

भारतीय संस्कृति मानववाद एवं सार्वभौमिकतावाद पर विश्वाश करती है और यही विवेकानंद के राष्ट्रवाद का आधार था। वे ना केवल भारतीय अध्मिकता के प्रसार पर बल देते थे बल्कि वे भारत के लोगों को

एक नई ऊर्जा से भर देना चाहते थे। उनका भारतीय वैज्ञानिकों की परियोजना पर अटूट विश्वाश था। उनके द्वारा जगदीश चंद्रबोस का समर्थन किया गया था। उन्होंने सामाजिक रूप से शोषित व्यक्तियों की शिक्षा पर बहुत अधिक जोर दिया एवं उन्हें दरिद्र नारायण कह कर पुकारा। उन्होंने भारत के लिए एक आध्यात्मिक लक्ष्य निर्धारित किया था। राष्ट्रवाद पर उनके विचार आध्यात्मिकता पर आधारित थे। स्वतंत्रता के मामले में विवेकानन्द जी का विचार था कि भारतियों को स्वाधीनता केवल ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा पारित प्रस्ताव से ही नहीं मिलेगी। भारतियों को स्वाधीनता के लिए तैयार होना होगा क्यूंकि वह उस स्वाधीनता की कीमत कभी नहीं समझ पाएंगे, इस प्रकार वह स्वाधीनता अर्थहिन हो जाएगी। वे सेवाभाव,आत्मज्ञान एवं विनम्रता को राष्ट्रवाद का हिस्सा बनाना चाहते थे। वे कहते हैं कि भारत का भविष्य, हिन्दू धर्म और इस्लाम के सौहार्दपूर्ण रिश्तों में ही निहित है। वे एक ऐसा भारत चाहते हैं जिसकी 'बुद्धि वेदांत और शरीर इस्लाम हो'।उनका मानना था कि हमारा पवित्र भारतवर्ष धर्म एवं दर्शन की पवित्र भूमि है यहीं बड़े—बड़े महात्माओं एवं ऋषियों का जनम हुआ है। 13 यही संन्यास एवंत्याग की भूमि है तथा केवल यहींआदिकाल सेलेकर आजतक मनुष्य केलिए जीवन के सर्वोच्च एवं मुक्ति का द्वार खुला हुआ है। उन्होंने लिखा है "हर राष्ट्र की एक नियति होती है, जिसको वह प्राप्त होता है। हर राष्ट्र के पास एक संदेश होता है, जो उसे पहुंचाना होता है। हर राष्ट्र का एक मिशन होता है, जिसे उसे हासिल करना होता है। हमें हमारी नस्ल का मिशन समझना होगा। उस नियति को समझना होगा, जिसे हमें पाना है। राष्ट्रों में हमारा क्या स्थान हो हमें वह समझना होगा और विभिन्न नस्लों के बीच सौहार्द बढ़ाने में हमारी भूमिका को जानना होगा।14"

डपसंहार

स्वामी विवेकानंद एक ऐसा व्यक्तित्व रहे हैं जिन्होंने सन्यासी होकर भी निष्क्रिय जीवन व्यतीत ना कर के बल्कि अपने आप को देश के प्रति समर्पित कर दिया स्वामी विवेकाननद यह मानते थे कि भारतीय अगर स्वाधीनता के लिए तैयार नहीं रहेंगे तो वह उसका मर्म नहीं समझ सकेंगे उनकी यह बात आज के वर्तमान भारत में सत्य होती हुई नजर आती है। भारत में आज के युग में विवेकानंद की प्रसंगिगता एवं तब और भी बढ़ जाता है जब भारत देश पूर्व के भौतिकवाद् से भर्मित होने के बाद एक बार पुनः अपनी आत्मा एवं पहचान कि खोज में जुटा है। विवेकानंद का दर्शन उन चुने हूऐ दर्शनशास्त्रों में से एक है जो आधुनिक होने के साथ , परस्पर भारत के विशाल इतिहास से भी जुड़ा रहता है। आज के युग में भारत को एक ऐस ही सोच कि आवश्यकता है जिसकी परिकल्पना में व्यक्तिवाद एव्म समष्टिवाद दोनों चिंतनों के लिए सीन है। शिक्षा क्या है ? क्या वह पुस्तक विद्या है ?नहीं। क्या वह ना ना प्रकार का ज्ञान है ? नहीं। यह भी नहीं। जिस संयम के द्वारा इच्छाशक्ति का प्रभाह और विकास वश में लाया जाता है और वह

बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 3, July-September 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

फलदायक होता है वह शिक्षा कहलाती है। जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें ,चरित्र गठन कर सकें और विचारों को सामंजस्य कर सकें वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है। स्वामी विवेकानंद द्वारा राम कृष्ण मिशन की स्थापना इसी उदेश्य से की गयी थी। इस मिशन ने हिन्दू समाज के पुनर्जागरण एवं पुनरुद्धार में अहम भूमिका निभाई और वर्तमान में निरंतर इसी कार्य ओर अग्रसर है। स्वामी विवेकानंद द्वारा वेदांत दर्शन की नयी व्याख्या की गयी। उनका मानना था की नव वेदांत दर्शन हिन्दू धर्म की सांस्कृतिक ताकत को बढ़ाएगा और आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा। नव वेदांत दर्शन के अनुसार स्वामी विवेकानद ने कहा कि सभी धर्म समान हैं एवं वे विभिन्न मार्ग द्वारा एक ही ओर अग्रसर हो रहे हैं। उनके अनुसार, नैतिकता और कुछ नहीं बल्कि व्यक्ति कोएक अच्छा नागरिक बनाने में सहायता करने वाली नियम संहिता है। उन्होंने युवाओं को आध्यात्मिक बल के साथ–साथ शारीरिक बल में वृद्धि करने के लिये भी प्रेरित किया। स्वामी विवेकानंद द्वारा धार्मिक आडम्बरों पर गहरी चोट की गई। उन्होंने कहा था की मेरा ईश्वर गरीब,पीड़ितों एवं निःसहाययों में निवास करता है। उनके अनुसार सारे धर्मों का सार एक ही है भले ही धर्मों के प्रतीक अलग–अलग हों।

References:-

1. Dulal Chand Pandey ,2014,Swami Vivekanand's Neo- Vedanta, In Theory & Practices: A Critical Study; Ramkrishna Mission Institute Of Culture

2. Swami Gambhiranand, 2008, YugNayak Vivekanand; 5th Edition, VOLUME 1; Ramkrishna Math, Nagpur.

3. Swami Gambhiranand, 2008, YugNayak Vivekanand; 5th Edition, VOLUME II; Ramkrishna Math, Nagpur.

4. Swami Bodhasarananda, 2013, the Complete Works of Swami Vivekanand; 2ndEdition; Volume I, Mayawati Champawat.

5. Swami Bodhasarananda, 2013, the Complete Works of Swami Vivekanand; 2ndEdition; Volume I I, Mayawati Champawat.

6. Swami Bodhasarananda, AUGUST, 2013, the Complete Works of Swami Vivekanand; 2ndEdition; Volume III, Mayawati Champawat.

7. Swami Bodhasarananda, AUGUST, 2013, the Complete Works of Swami Vivekanand; 2ndEdition; Volume III, Mayawati Champawat.

8. Swami Bodhasarananda, SEPTEMBER, 2013, the Complete Works of Swami Vivekanand; 2ndEdition; Volume IV, Mayawati Champawat.

9. Swami Bodhasarananda, OCTOBER, 2013, the Complete Works of Swami Vivekanand; 2ndEdition; Volume V, Mayawati Champawat.

10.Swami Bodhasarananda, NOVEMBER, 2013, the Complete Works of Swami Vivekanand; 2ndEdition; Volume VI, Mayawati Champawat.

11.Swami Bodhasarananda, NOVEMBER, 2013, the Complete Works of Swami Vivekanand; 2ndEdition; VolumeVII, Mayawati Champawat.

12.Swami Bodhasarananda, DECEMBER, 2013, the Complete Works of Swami Vivekanand; 2nd Edition; Volume VIII, Mayawati Champawat.

13.(compiled by)Dr. Kiran Walia, 2012, My Ideas of Education; Ramkrishna Mission Belur Math.

14.Swami Muktidananda, 2018; Vivekanand His Call to the Nation; Mayawati Champawat.